بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 02.01.2026

आँहज़रत ﷺ के सच्चे सेवक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के ईश्प्रेम का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (सुलह महीने की तिथि 2,1404 हश) 02.01.26

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बे में आंहज़रत ﷺ सुन्दर नमूने तथा अल्लाह से मुहब्बत के विषय में बयान हुआ था। इस ज़माने में आप स. के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आक़ा (आंहज़रत ﷺ) के अनुसरण में अल्लाह से प्रेम के उच्चतम स्तर स्थापित किए जिनके परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला के फ़ज़ल आप अलै. पर हुए और जो ख़ुदा से आपकी मुहब्बत थी, उसको लोग भी अनुभव करते थे। इस सम्बन्ध में कुछ घटनाएं बयान करूंगा, इससे पहले हज़रत मसीह मौऊद अलै. के अपने शब्दों में इस प्रेम का वर्णन करता हूँ।

एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं- मैं कुछ बयान नहीं कर सकता कि मेरा कौनसा कर्म था जिसके कारण मुझ पर अल्लाह की यह कृपा हुई। केवल अपने अन्दर यह अनुभव करता हूँ कि स्वभाविक रूप से मेरे ह्रदय को ख़ुदा तआला की ओर एक प्रकार का आकर्षण है जो किसी चीज़ के रोकने से रुक नहीं सकता, अतः यह उसी की कृपा है। अर्थात जो अल्लाह तआला के मुझ पर उपकार हैं, यह सब इस लिए मिला कि मैं अल्लाह तआला के प्यारे नबी आंहज़रत ﷺ का सम्पूर्ण आज्ञापालन करने वाला और आप स. से प्रेम करने वाला हूँ और उसके परिणाम स्वरूप

फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत के द्वार भी मुझ पर खुलते चले गए। एक जगह आप अलै. फ़रमाते हैं- मेरे मकान मस्जिदें हैं, दिव्य पुरुष मेरे भाई हैं, अल्लाह तआला की स्तुति मेरी धन संपत्ति है, उसके प्राणी मेरा परिवार हैं। एक अन्य स्थान पर आप फ़रमाते हैं- हम प्रत्येक चीज़ से केवल अल्लाह तआला के लिए प्यार करते हैं। फिर फ़रमाया- ख़ुदा के साथ हमारे सम्बन्ध को कोई चीज़ तोड़ नहीं सकती और मुझे उसके मान सम्मान की क़सम है कि मुझे दुनिया और आख़िरत में उससे बढ़ कर कोई चीज़ भी प्यारी नहीं कि उसके दीन की महानता प्रकट हो, उसका प्रकाश चमके तथा उसका बोल बाला हो।

हज़रत मुन्शी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी रज़ी. कहते हैं कि एक बार आप अलै. ने फ़रमाया- परीक्षा की घड़ी में हमें कभी कभी अपनी जमाअत के कमज़ोर दिल लोगों की आशंका होती है, फ़रमाया- मेरा यह हाल है कि यदि मुझे साफ़ आवाज़ भी आवे कि तू व्यर्थ है और हम तेरी कोई अभिलाषा पूरी नहीं करेंगे, तो मुझे ख़ुदा तआला की क़सम है कि इस इश्क़ एवं मुहब्बते इलाही और दीन की सेवा में कोई कमी नहीं आएगी।

हज़रत नवाब मुबारक बेगम साहिबा फ़रमाती हैं- जाते बारी तआला का इश्क़ भी जो आप अलै. की अन्तरात्मा के कण कण में विद्यमान था, आप अलै. की कथनी एवं करनी से हर समय प्रकट होता था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं- यहाँ एक व्यक्ति थे जो बाद में जमाअत में शामिल भी हो गए और हजरत साहब अलै. से उनका घनिष्ट सम्बन्ध था। परन्तु अहमदी होने से पहले हज़रत साहब अलै. उनसे 20 वर्षों तक नाराज़ रहे। कारण यह था कि उनका एक लड़का मर गया तो उनके मुंह से निकल गया कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ा अत्याचार किया है। फिर अल्लाह ने उनको बैअत की तौफ़ीक़ दी और वे मूर्खता से बाहर निकल आए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. के सिर में चक्कर आते थे, एक वैद्य इसका उत्तम उपचार जानता था, उसे दूर से बुलवाया गया। उसने हुज़ूर अलै. को देख कर कहा कि मैं दो दिन में आपको स्वस्थ कर दूंगा। आप अलै. ने उससे इलाज नहीं करवाया, क्यूंकि उसने जो दावा किया वह ख़ुदाई का दावा था, वास्तविक स्वस्थ करने वाला तो अल्लाह तआला है।

हज़रत शेख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि जब मुझे डलहौज़ी जाने का अवसर होता तो पर्वतों के हरे भरे अंशों एवं बहते हुए स्रोतों को देख कर दिल में अल्लाह तआला की प्रशंसा का जोश उत्पन्न होता और इबादत में विशेष प्रकार का आनंद आता।

मुकर्रम मौला बख्श साहब की रिवायत है कि जब मरहूम मुबारक साहब बीमार थे तो उनके

सम्बन्ध में हज़रत मसीह मौऊद अलै. को चिन्ता रहती थी। जब साहिबज़ादा साहब का निधन हो गया तो कुछ सहाबी खेद प्रकट करने आए। हुज़ूर मस्जिद में तशरीफ़ लाए, हुज़ूर अलै. पूर्व की भान्ति बल्कि अत्यधिक प्रसन्न दिखाई देते थे, फ़रमाया- मुबारक अहमद का देहांत हो गया है, मेरे मौला की बात पूरी हुई, उसने पहले ही बता दिया था कि यह लड़का या तो जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा, या अत्यंत दिव्य पुरुष होगा। अतः अल्लाह ने उसको बुला लिया। एक मुबारक अहमद क्या यदि एक हज़ार बेटा भी हो और हज़ार ही का निधन हो जाए, किन्तु मेरा मौला ख़ुश हो, अर्थात उसकी बात पूरी हो तो मेरी ख़ुशी भी उसी में है।

लुधियाना के मुन्शी अहमद जान साहब जब हज पर जाने लगे तो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने उन्हें पत्र लिखा कि इस विनीत की एक विनय पूर्ण प्रार्थना याद रखें कि जब आपको ईशवर की कृपा से बैतुल्लाह के दर्शन हों तो उस पवित्र स्थल पर इस अल्लाह के बन्दे विनीत की ओर से इन शब्दों में प्रार्थना करें- ऐ अर्हमुर्राहिमीन! तेरा एक बंदा विनीत एवं तुच्छ, योग्य तथा दोषपूर्ण गुलाम अहमद, जो तेरी धरती हिन्द नामक स्थान में है, उसका यह निवेदन है कि ऐ अर्हमुर्राहिमीन! तू मुझसे राज़ी हो और मेरे दोषों को क्षमा कर दे कि तू बख्शनहार एवं दयाशील है, और मुझ से वह काम करा जिससे तू अत्यंत ख़ुश हो जाए। मुझमें और मेरे स्वार्थ में पूरब एवं पश्चिम का भेद कर दे तथा मेरा जीवन और मृत्यु तथा मेरी हर एक शक्ति जो मुझे प्राप्त है अपने ही मार्ग में लगा दे और अपने ही प्रेम में मुझे जीवित रख और अपने ही प्रेम में मुझे मौत दे और अपने सम्पूण चाहने वालों में ही मुझे उठा।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- मैं कहता हूँ कि यदि मुझे इस बात का विश्वास दिला दिया जावे कि ख़ुदा तआला से प्रेम करने तथा उसका आज्ञापालन करने में मुझे कठोर से कठोर दंड दिया जाएगा तो मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मेरा स्वभाव ऐसा बना है कि वह इन कष्टों एवं दुविधाओं को एक आनंद एवं प्रेम को उत्साह तथा रुचि के साथ सहन करने को तय्यार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि मैं उन निशानों को नहीं गिन सकता जो मैं जानता हूँ। मैं तुझे पहचानता हूँ कि तू ही मेरा ख़ुदा है। आप अलै. ने अल्लाह तआला को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि इस लिए मेरी आत्मा तेरे नाम से ऐसे उछलती है जैसे कि शिशु अपनी माँ को देखने से, किन्तु प्रायः लोगों ने मुझे नहीं पहचाना और न स्वीकार किया।

अतएव यह मुहब्बते इलाही और इश्क़ इलाही था जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अपने स्वामी के आज्ञापालन में अल्लाह तआला से पैदा हुआ और इसका अनुरोध आप अलै. ने अपनी जमाअत से भी किया। आपने फ़रमाया कि हर बलिदान के लिए तय्यार रहो, जब तुम अल्लाह तआला के लिए क़ुरबानी दोगे, उससे प्रेम प्रकट करोगे, उसका हक़ अदा करोगे तो फिर अल्लाह तआला भी तुमसे ऐसी ही मुहब्बत करेगा कि हर दुश्मन से तुम्हें

बचाएगा, हर कष्ट से तुम्हें सुरक्षित रखेगा और उसकी प्रसन्नता के लिए तुम जो भी काम करोगे उसपर अल्लाह तआला तुम्हें अत्यधिक सुविधाएँ प्रदान करेगा, इस जगत में भी एवं अगले जगत में भी। अल्लाह तआला हमें ऐसा प्रिय बनाए, प्रेम करने वला बनाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- कल से नव वर्ष आरम्भ हो चुका है, लोग एक दूसरे को शुभ कामनाएं भी दे रहे हैं, दुआ करें कि यह साल हमारे लिए अत्यधिक बरकतों का साल हो। अल्लाह तआला विरोधियों एवं दुश्मनों के षडयन्त्र धूल में मिला दे और जमाअत को पहले से बढ़ कर प्रगति करने वाली बनाए। हम जो बाहर के देशों में हैं, विशेष रूप से स्वतंत्र देशों में स्वतंत्र हैं और नव वर्ष के समारोह मना रहे हैं, बल्कि पाकिस्तान इत्यादि में भी लोग मना रहे हैं, ऐसे समय पर अपने बन्दी बने हुए भाईयों को भी दुआओं में याद रखें। पकिस्तान की जेलों में, जैसा कि पिछले दिनों मैंने बताया था, मुबारक सानी साहब, इनको आजीवन कारावास का दंड दिया है, तथा अन्य बंदी बनाए गए लोग हैं, इस अवस्था में भी वे नव वर्ष में अल्लाह तआला का आभार प्रकट करते हुए दाख़िल हो रहे हैं, कोई खेद नहीं इन्हें। अल्लाह तआला की रज़ा के लिए उन्होंने लोहे के कड़े पहने हुए हैं। अल्लाह तआला इनकी रिहाई के जल्दी सामान पैदा फ़रमाए। हमें भी इन बन्दी हुए लोगों तथा कठिनाइयों से ग्रस्त अहमदियों को अल्लाह तआला के प्रेम की अनुभूति पहले से बढ़ कर प्राप्त हो। कठिनाइयों के कारण हमारी अल्लाह तआला से मुहब्बत में कमी होने के बजाए इसमें पहले अधिक वृद्धि हो। पीड़ितों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला दुनिया के समस्त दुखियों को अत्याचारियों के पंजों से छुड़ाए तथा विश्व में शान्ति स्थापित हो।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने तीन मृतकों मुकर्रमा रीहाना बास्मा साहिबा पतनी सय्यद अहमद नासिर साहब जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. की पड़पोती, हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब की पोती और हज़रत मीर मुहम्मद इस्हाक़ साहब रज़ी. की नवासी थीं, तथा इफ़्फ़त हलीम साहिबा पतनी डाक्टर अब्दुल हलीम साहब, पूर्व अद्ध्यक्ष लजना इमा इल्लाह लाईबेरिया एवं मिस्र के अब्दुल अलीम बरोबरी साहब का सदवर्णन फ़रमाया, तीनों मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलंदी की लिए दुआ की और इनकी नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब